Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ केदार गौरी पूजा सामग्री ॥

॥ जय केदारेश्वर गौरी ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ सामान्य और विशेष सामग्री ॥

पूजा स्थान

स्वच्छ चौकी, साफ वस्त्र, शिव-गौरी या अर्धनारीश्वर का चित्र, शिवलिंग अथवा कलश के लिए स्थिर स्थान तैयार करें। परिवार की रीति में हो तो कलश के नीचे अक्षत या अन्न और ऊपर पत्ते तथा नारियल रखें।

अर्पण की वस्तुएँ

स्वच्छ जल, फूल, अक्षत, चंदन, हल्दी-कुमकुम, बिल्वपत्र यदि उपलब्ध हों, धूप, दीप, फल और सात्त्विक नैवेद्य रखें। प्रसाद घर में उपलब्ध सामग्री से बनाएँ। पात्र, कटोरी और आरती की थाली भी साफ रखें।

तोरम या व्रत सूत्र

कुछ घरों में हल्दी लगा सूती तोरम तैयार कर कलश के पास पूजते हैं और अंत में बाँधते हैं। कहीं इक्कीस लड़ियों या इक्कीस गाँठों का विधान मिलता है, जबकि दूसरी परंपराओं में भिन्न गिनती है। अपनी स्थापित रीति का अनुसरण करें।

महँगी वस्तुएँ या विशेष धातु का कलश अनिवार्य नहीं है। साधारण स्वच्छ पात्र और उपलब्ध फूल से भी सरल पूजा की जा सकती है।

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ सामग्री जुटाते समय ध्यान दें ॥

कलश और सुरक्षित सजावट

कलश स्थिर रखें ताकि पानी न गिरे। चित्र और विद्युत सजावट पर जल सीधे न डालें। दीप के पास कपड़ा, सूखा फूल, नारियल रेशा और बच्चों की पहुँच का ध्यान रखें।

प्रसाद और दान

फल, घर में बना मीठा या सादा भोजन नैवेद्य रख सकते हैं। विस्तृत परंपरा में अन्न, वस्त्र या दक्षिणा दान की रीति भी मिलती है। सब कुछ अपनी क्षमता और घर की मान्यता के अनुसार करें।

वैकल्पिक वस्तुएँ

मंडप, केले का पत्ता, विशेष मिठाई और धागे की निश्चित संख्या कई परिवारों में प्रयुक्त होती है। इनकी अनुपस्थिति में चित्र, जल, फूल और दीप से पूजा का क्रम सरल रखें।

पूजा पूरी होने पर फूल और अन्न का सम्मानपूर्वक उपयोग या उचित निपटान करें। प्लास्टिक या रासायनिक सजावट जल स्रोत में न डालें।

॥ जय केदारेश्वर गौरी ॥